सुविचार

मेरी परछाई भी,मेरी उपलब्धियों से डाह रखती है। मुझे लगता है,ये कई दफ़ा मुझे गुमराह करती है।

रचना:-जीवन चन्द्राकर 'लाल''
बोरसी 52 दुर्ग (छत्तीसगढ़)

संपादकीय

दीदी का 'द एंड' भवानीपुर की हार ने लिखी सियासी विदाई की पटकथा

(प्रथम पृष्ठ से जारी)

सियासत के इस मोड़ पर सबसे बड़ा प्रश्न अब यही उठ रहा है–क्या ममता अब सक्रिय राजनीति से संन्यास लेंगी? 71 वर्ष की उम्र, लगातार स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां, दल के भीतर बढ़ती असंतोष की लहर और भवानीपुर से मिली करारी हार के बाद उनके विकल्प बेहद सीमित रह गए हैं। टीएमसी के कई वरिष्ठ नेता पहले ही बीजेपी की ओर रुख करते दिखाई दे रहे हैं। यदि ममता सदन तक नहीं पहुंच पातीं, तो उनका विपक्षी चेहरा भी काफी कमजोर पड़ जाएगा। क्या वे अब राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष को एकजुट करने का प्रयास करेंगी, या बंगाल की राजनीति से हमेशा के लिए दूरी बना लेंगी? कई विश्लेषक इसे उनके राजनीतिक करियर का बड़ा मोड़ मान रहे हैं।

'दिल्ली पर कब्जा' का नारा अब केवल खोखली गूंज बनकर रह गया है। ममता बनर्जी ने परिणाम आने के बाद चुनाव आयोग पर भारी अनियमितताओं और साजिश का आरोप लगाया, साथ ही केंद्रीय बलों पर कार्यकर्ताओं पर अत्याचार का आरोप भी लगाया। संघर्ष की आग में तपकर उभरा यह नेतृत्व, लंबे सत्ता काल में अपनी ही चमक खो बैठा–ममता के साथ भी यही हुआ। उन्होंने लेफ्ट के 34 साल के शासन को ध्वस्त किया था, पर अपनी 15 साल की सत्ता में वही भूलें दोहराईं–परिवारवाद, भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण। बीजेपी की सरकार बनने के बाद अब आयुष्मान भारत, सुदृढ़ कानून व्यवस्था और तेज औद्योगिक निवेश की नई उम्मीद जाग उठी है। बंगाल के युवा और महिलाएं, जो आरजी कर और सैंडेशखाली के बाद सड़कों पर उतरे थे, आज खुलकर जीत का उत्सव मना रहे हैं। इस बार महिलाओं और नए मतदाताओं का समर्थन निर्णायक साबित हुआ। ममता की हार केवल सीटों की नहीं, बल्कि भरोसे और विश्वसनीयता की गहरी पराजय है। सियासी भूचाल ने टीएमसी की जड़ों तक को हिला दिया है–भवानीपुर में मिली अंतिम हार इसका स्पष्ट संकेत है। घोटालों और हिंसा के आरोपों से पहले ही घिरी पार्टी अब नेतृत्व के संकट से जूझ रही है। ममता के बिना टीएमसी का भविष्य अनिश्चित दिखाई दे रहा है, और कई नेता पाला बदलने की तैयारी में हैं। बीजेपी की 'लोटस फ्रॉम गंगोत्री टू गंगासागर' रणनीति पूरी तरह सफल रही। पीएम मोदी ने इसे जनता की विजय बताया। बंगाल में पहली बार बीजेपी सरकार बनने की स्थिति बन चुकी है। यह परिवर्तन केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि पूरे पूर्वी भारत के राजनीतिक समीकरणों में बड़ा बदलाव है। 2029 के लोकसभा चुनाव के लिए भी इससे नए द्वार खुल गए हैं। बंगाल के आकाश पर अब एक नई भोर की किरण साफ झलक रही है। ममता बनर्जी की भवानीपुर हार केवल एक नेता की पराजय नहीं, बल्कि 15 वर्षों से चले आ रहे भ्रष्टाचार, हिंसा और तुष्टिकरण के पूरे मॉडल का पतन है। इतिहास बार-बार यही सिखाता है कि जो समय के साथ कदम नहीं मिलाता, समय उसे पीछे छोड़ देता है। ममता संन्यास लें या संघर्ष जारी रखें, बंगाल अब विकास, सुरक्षा और सुशासन की दिशा में आगे बढ़ चुका है। अब प्रश्न यह नहीं कि ममता क्या करेंगी, बल्कि यह है कि नई सरकार राज्य को कितनी तेजी से प्रगति की ओर ले जाएगी। जनता ने अपना निर्णय सुना दिया है–और यह निर्णय अंतिम है।

शिक्षाविद् बड़वानी (मप्र)

बुद्ध होने का अर्थ क्या है?

कभी विचार करता हूँ कि क्यों एक राजकुमार घर छोड कर चल पडता है, कष्ट सहता है और बुद्ध बन जाता है? क्या बुद्ध से पहले कोई घर त्याग कर नही निकला, क्या किसी को मोक्ष नही मिला था पहले, फिर बुद्ध क्यों? विचारणीय यह भी है कि एक राजकुमार महावीर बनता है और उससे पहले भी तीर्थंकर राजकुमार या समृद्ध थे और फिर बुद्ध भी राजकुमार ही थे। मेरी पीडा यह भी है कि कोई समर्पित सन्त बुद्ध क्यों नही बन पाता? पुनः बुद्ध बनने का अर्थ क्या? हमे लगता है कि बुद्ध होने का मतलब मानवता के लिये स्वयं का समर्पण और अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण। आज बुद्ध का कौन सा अनुयायी है जो मानवता हित बढ रहा है और जिसने अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण किया है? काम क्रोध लोभ मद मोह सबको धारण कर कौन सा बुद्धत्व पा रहे हैं? मॉस मदिरा और व्यसन बोद्ध धर्म के अनुयायीयों मे प्रमुखता से व्याप्त है। सब कभी खराब नही होते मगर विचारणीय अवश्य है। तो बुद्ध बनो अवश्य बनो मगर केवल नाम से नही अपितु आचरण से बनो। अगर आप एक प्रतिशत भी बुद्ध बन गये तो मोक्ष निश्चित मिलेगा। और हाँ बुद्ध को किसी धर्म जाति से मत बाँधो। शायद बुद्ध के तथाकथित अनुयायियों से ज्यादा अन्य लोग बुद्ध का अनुसरण करते हैं। बुद्ध की शिक्षा नीति तथा दर्शन प्रिय है।

कीर्ति वर्द्धन

कहानी

ख़्वाबों की हक़ीक़त

वो मेरे ख़्वाबों की हक़ीक़त और मेरे तमाम अरमानों का मरकज़ थी। मैं उसे दिल की बे-इंतहा गहराइयों से चाहने लगा था। ये उसकी मुहब्बत का एजाज़ था कि उसने मुझे वक़्त का पाबंद बना दिया था। मैं, जो कभी देर से सोकर उठता था, अब अहले-सुबह बेदार हो जाता और दिन भर के तमाम काम वक़्त पर निपटा कर पढ़ाई के लिए कॉलेज निकल पड़ता। उन दिनों कॉलेज पैदल ही जाना होता था, मोटरसाइकिल का ज़माना नहीं था, मुराद ये कि हर किसी के पास ऐसी सवारी का होना एक बड़ी बात समझी जाती थी। और वो भी कॉलेज के मोड़ पर मेरा इंतज़ार करती हुई मालूम होती थी। दिसंबर की वो गुलाबी ठंड थी, और ऐसी ही एक सहर-अंगेज़ गुलाबी शाम को उससे मेरी पहली मुलाक़ात हुई थी। उसका नाम पिंकी था। पिंकी से पहले भी मैंने कई सूरतें देखी थीं, मगर पिंकी से मुलाक़ातों का सिलसिला कुछ इस तरह चला कि इश्क़ परवान चढ़ गया और वादे शादी की दहलीज तक जा पहुँचे। इम्तेहान हुए, रिज़ल्ट आया, और फिर कामयाबियों और मुस्तक़बिल (भविष्य) की फ़िक्रों के साथ, खत-किताबत का सिलसिला जारी रखने के वादों के साथ रुख़सती का वक़्त आ गया। मुझे आला तालीम (उच्च शिक्षा) के लिए शहर आना पड़ा और वो अपने शहर के एक मुक़ामी स्कूल में शिक्षक मुक़र्रर हो गई। मैंने भोपाल के एक होम्योपैथिक कॉलेज में दाख़िला ले लिया। वहां से कभी-कभार मिलना हो जाता और ख़तों का सिलसिला भी जारी रहा। मेरा एक साल बख़ूबी गुज़रा और मैं अगली जमात में पहुँच गया। मेरी ज़िद थी कि पहले अपनी पढ़ाई मुकम्मल कर लूँ, फ़िर पिंकी से शादी करके एक ख़ुशहाल ज़िन्दगी का आग़ाज़ करूँ। पिंकी भी मेरे इस फ़ैसले पर पूरी तरह रज़ामंद थी। हमारी मुहब्बत और इस पाक रिश्ते से दोनों तरफ़ के घर वाले वाक़िफ़ थे, सो कोई फ़िक्र की बात न थी। एक रोज़ मैं भोपाल के बड़े तालाब के किनारे बैठा, दूर-दूर तक फ़ैली शाम की हल्की-हल्की तारिक (धुंधली) लहरों को डूबते हुए देख रहा था। हवा के ठंडे और ख़ुशगुमा झोंके दिल-ओ-दिमाग़ को बहला रहे थे। मगर उस सन्नाटे में ऐसा महसूस हो रहा था जैसे कहीं समंदर में जज़्बों के सायरन गूँज रहे हों, और ये आवाज़ें फ़िज़ाओं को चीर कर नसीब की आहों से टकरा कर मुझे ख़बरदार कर रही हों। बरसों से यही रीत चली आ रही है कि इंसान जो चाहता है, उसे वो मुयस्सर नहीं आता। समंदर में लहरें उठती हैं, साहिल से टकराकर सिसकती हैं और वापस समंदर की अज़ल गहराइयों में गुम हो जाती हैं। 'नहीं, नहीं! मैं ये क्या सोच रहा हूँ!' मैंने इन मनहूस ख़्यालों को झटक दिया और हक़ीक़त की दुनिया में लौटकर अपने कमरे की तरफ़ गामज़न (चलना) हो गया। मगर वो बे-मतलब के ख़्यालात रात भर मुझे सताते रहे और नींद आँखों से कोसों दूर रही। ये मार्च का महीना था। मैंने सोचा कि इम्तेहान के बाद पिंकी से मिलूँगा। पिंकी ने बताया था कि वो अब नौकरी छोड़ कर बी.एड करना चाहती है और इस सिलसिले में उसे बुरहानपुर जाना होगा। उसने कहा था कि शायद कुछ दिनों तक मुलाक़ात या बात न हो सके। मेरा भी यही ख़्यालात था कि वो अपनी तालीम जारी रखे और एक कामयाब शख़्सियत बन कर समाज को फ़ैज़याब (लाभान्वित) करे। उसने मुस्कुरा कर कहा था 'जनाब, हम कहाँ जा रहे हैं? हम तो आपके ही हैं, बस अभी इंतज़ार का मज़ा लीजिए और इम्तेहान में दिल लगा कर आगे बढ़िए।' मार्च के बाक़ी दिनों में कोई बात न हो सके। उस दौर में मोबाइल का वजूद न था, बस उसके ख़त ही मेरा

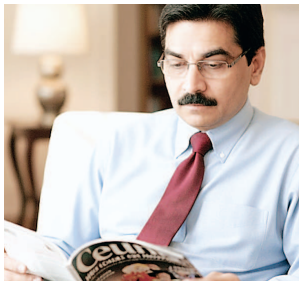

सरमाया थे, जिन्हें मैंने आज भी हिफ़ाज़त से कलेजे से लगा कर रखा है। इम्तेहान के बाद जब मैं वापस लौटा तो पिंकी से न मिल सका। बेचैनी बढ़ी तो मैं उसके घर की जानिब चल पड़ा, मगर पता चला कि वो सब अपने आबाई शहर वापस चले गए हैं। उसके वालिदैन भी मुलाज़मत में थे। मैंने सोचा कोई बात नहीं, शहर का पता तो है ही, वहां जाकर मिल लूँगा। जब मैं वहां पहुँचा, तो पिंकी और उसके घर के तमाम अफ़राद मौजूद थे। मगर पिंकी का रवैया बदला हुआ था। वो ठीक से बात नहीं कर रही थी, बहुत उखड़ी-उखड़ी और बेज़ार नज़र आई। मुझे अपने सुनहरे सपने टूट कर बिखरते नज़र आने लगे। फ़िर एक दिन ख़बर मिली कि पिंकी की सगाई की रस्म होने वाली है। मैं तमतमा उठा। मैंने लाख जतन किए कि पिंकी से तन्हाई में बात हो सके, मगर अब मिलना मुहाल (असम्भव) हो गया था। कोई सूरत नज़र न आती थी। तभी पिंकी का एक ख़त मिला, जिसमें लिखा था, 'ज़िन्दगी एक हक़ीक़त है जिससे मुँह नहीं मोड़ा जा सकता। मैं तुम्हारी हर ख़ुशी में शरीक़ थी, और दुआ करती हूँ कि तुम सदा ख़ुश रहो। अब मेरा तुमसे मिलना मुमकिन नहीं, वजह तुम ख़ुद जानते हो। मैं ख़ुद यहाँ से अपना रास्ता अलग करती हूँ।' टूटा हुआ दिल रफ़्ता-रफ़्ता संभलने लगा। वक़्त ने मरहम का काम किया और ज़ख़्म भर गया, लेकिन ज़हन में अक्सर ये सवाल दस्तक देता कि आख़िर वजह क्या थी? क्या घर वालों का दबाव था या मुझमें कोई कमी नज़र आने लगी थी? क्या मैं उसे वो ख़ुशियाँ देने में नाकाम रहने वाला था? ख़ैर, मुक़द्दर के फ़ैसले तो ख़ुदा ही करता है। तक़रीबन चार साल गुज़र गए। एक रोज़ मैं क्लिनिक वक़्त पर न पहुँच सका। जब बदहवास पहुँचा तो मेरे असिस्टेंट ने एक ख़ूबसूरत लिफ़ाफ़ा मुझे दिया और कहा 'एक मोहतरमा आई थीं, बहुत इंतज़ार किया और ये दे गईं।' लिफ़ाफ़े पर 'पिंकी' लिखा देख कर मेरी हैरत की इंतहा न रही। अंदर तहरीर थी, 'मैं बहुत दिनों से तुम्हें तलाश कर रही थी, शुक्र है ख़ुदा का कि आज पता मिल गया। आज शाम 6 बजे न्यू मार्केट के उसी कैफ़े में मिलो जहाँ हम अक्सर मिला करते थे।' मेरी बेक़रारी बढ़ गई। मैं वक़्त से पहले ही मुक़र्रर जगह पर पहुँच गया। वहां देखा तो वो पहले से ही रौशन-अफ़रोज़ थी। उसे देख कर मैं जज़्बात पर क़ाबू न रख सका, मगर ख़ुद को संभाला और उसके मुख़ातिब बैठ गया। उसकी आँखें बहुत कुछ कहना चाह रही थीं। मैंने उसकी आँखों में झाँकने की कोशिश की तो उसने आँखें झुका कर कहा, 'मैं तुम्हारे सामने हूँ, चाहे पढ़ लो।' अचानक उसके चेहरे का रंग बदलने लगा। हमारे दरमियान ख़ामोशी की एक दीवार खड़ी हो गई थी। मैंने चुप्पी तोड़ी और पूछा 'तुमने ऐसा क्यों किया? हमने तो साथ जीने-मरने की कसमें खाई थीं!' मैं उसे सारा माजरा सुनाया और कहा 'तुम बेवफ़ा हो।' वो कहने लगी 'तुम किस वफ़ा की बात करते हो? तुमने तो ख़ुद मुझे छोड़ दिया था।' मैंने कहा 'मैं तो आज भी तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूँ।' ये कहते ही मेरी आँखों में नमी उतर आई। वो बोली 'इतनी बेक़रारी क्यों है? दरअसल आपकी एक अमानत मेरे पास महफ़ूज़ है, वो लौटाने आई हूँ।' उसने एक मुड़ा हुआ काग़ज़ मेरी तरफ़ बढ़ा दिया। वो एक टाइप किया हुआ मज़मून था, जिसमें लिखा था 'डिअर पिंकी, मैं अपनी ज़िन्दगी किसी और के साथ वाबस्ता (जोड़ना) करना चाहता हूँ, क्योंकि तुम मुझसे मुहब्बत नहीं करतीं। मैं तुम्हें वो ख़ुशियाँ नहीं दे सकता जो तुम चाहती हो। आज से मेरा तुमसे कोई रिश्ता नहीं।' नीचे दस्तख़त (हस्ताक्षर) हू-ब-हू मेरे ही थे। मेरा वजूद घायल हो गया। पैरों के नीचे से ज़मीन खिसकती महसूस हुई। कुच्चते-गोयाई (बोलने की शक्ति) ख़त्म हो गई और मैं चक्कर सा आने लगा। जब होश आया तो मैं अस्पताल में ही था और पिंकी मेरे सरहाने बैठी थी। मैंने उसका हाथ थाम कर रुँधी हुई आवाज़ में कहा 'पिंकी, ख़ुदा की क़सम ये ख़त मैंने कभी नहीं लिखा! ये किसकी घिनौनी साज़िश थी जिसके लिए तुमने मुझसे बात करना भी मुनासिब न समझा? एक झूठे ख़त और एक ग़लतफ़हमी की इतनी बड़ी सज़ा?' अस्पताल के उस कमरे की फ़िज़ा में बरसों की घुटन लम्हों में सिमट गई थी। पिंकी का हाथ मेरे हाथों में था, और वो लम्स (स्पर्श) गवाही दे रहा था कि दरमियान की तमाम दीवारें ढह चुकी हैं। वह काग़ज़ का टुकड़ा, जिसने हमारी ज़िंदगी के चार अनमोल साल हमसे छीन लिए थे, अब एक बे-जान रद्दी से ज़्यादा कुछ न था। मैंने खिड़की से बाहर देखा, शाम की सुर्ख़ी अब सितारों की चादर में छुपने की तैयारी कर रही थी। मुझे अहसास हुआ कि वक़्त ज़ालिम ज़रूर है, मगर वह उन रिश्तों को कभी नहीं मिटा सकता जिनकी बुनियाद ख़लूस (निष्ठा) और रूहानी पाकीज़गी पर हो। वह ग़लतफ़हमी जो एक 'टाइप्ड' ख़त के ज़रिए हमारे दरमियान बोई गई थी, आख़िर सच की तपिश के आगे राख हो गई। पिंकी की सिसकियाँ अब थम चुकी थीं और उसकी आँखों में वफ़ा का वो नूर लौट आया था जिसे मैंने बरसों पहले भोपाल के उस बड़े तालाब के किनारे देखा था। मैंने मुस्कुराते हुए उसकी तरफ़ देखा और धीरे से कहा, पिंकी, खोया हुआ वक़्त तो वापस नहीं आ सकता, मगर आने वाले कल की हर सुबह अब हमारी होगी। अब कोई भी साज़िश हमें जुदा नहीं कर पाएगी, क्योंकि हमने ख़ामोशी को ज़ुबान देना सीख लिया है। अस्पताल की उस नीम-तारीक (आधी अंधेरी) रोशनी में, हम दोनों के चेहरों पर मुस्तक़बिल का एक नया सूरज चमक रहा था। आंसुओं ने रूह को पाक कर दिया था और मुहब्बत अपनी पूरी आबो-ताब के साथ दोबारा लौट आई थी। वह शाम ढल रही थी, मगर कहानी का एक नया और हसीन बाब (अध्याय) अभी शुरू हुआ था।

पर्यावरण का शुभचिंतक

बालकहानी

सुनो सुनो साथियों सुनो ।भोलू बंदर आज फिर कटे पेड़ के चबूतरे पर चढ़ गया ।उसके आवाज लगाते ही रामू हाथी,शेरुशेर ,पिंटू जिराफ,मानू खरगोश,मोनू गेंडा ,हिन हिन घोड़ा ,बम-बम भालू,मिक्की बिल्ली , चम्पू चूहा ,गिल्लू गिलहरी ,सुंदर चीता ,डुलडुल मगर ,सिम्मी बतखअपने अपने खेत से निकल कर इकट्ठा हो गये।

बम-बम भालू बोला -क्या बात है भोलू क्यों शोर मचा रहे हो।

भोलू बंदर -शोर नहीं आगाह करना चाह रहा हूं आप सुन लें!

हमें अपने बारे में ही नहीं अपने नंदनवन के बारे में भी सोचना है।हमारा पर्यावरण तभी ठीक रहेगा जब हम मिलकर अपने घरों में, खेतो की मेड़ों पर पेड़ लगाएंगे।हां पेड़ लगाने से ज्यादा जरुरी है पेड़ों की रखवाली।आने वाला समय न जाने कैसा संकट का हो ,हमें मुस्तैद रहना होगा।अभी अप्रेल का महिना चल रहा है सूरज दादा कितनी आग उगल रहे हैं यही रवैया रहा तो पेड़ पोधे तो क्या हम भी

झुलस कर मर जायेंगे।

हमें अपनी छोटी सी नदी अपने श्रम से रोजाना साफ करनी होगी।पेड़ों को रोजाना खाद पानी देना होगा।अभी से हम तैयारी कर लें हमें कौन कौन से पेड़ छायादार फलदार लगाने है । कुछ ही दिनों में बादल दादा आसमान पर छाएंगे अपने साथ पानी लेकर आएंगे

।सुखद बरसात जब होगी हमारे लगाए पेड़ पौधे अंकुरित होकर जैसे जैसे बड़े होंगे हमें सुखद ठंडी बयार मिलेगी।मीठे मीठे स्वादिष्ट फल खाने को मिलेंगे।बीते सालों में हमने मेहनत की होती थोड़ा सा ध्यान लगाया होता तो आज सूरज दादा मनमानी नहीं कर पाते ऐसी आग नहीं उगल पाते।

मैं जिस पेड़ पर से खड़ा होकर आप सभी को सम्बोधित कर रहा हूं उस पेड़ को न जाने किस ने आरी से काट कर हत्या करने का अपराध किया है 'पेड़ों को इस तरह काटना हमारा ही विनाश करना है' ।कान खोलकर सुन लें सभी, कोई पेड़ नंदनवन में अब काटेगा नहीं ।

मैं नंदनवन का छोटा सा एक कवि हूं विचारक हूं शुभचिंतक हूं ।आपके सामने अपनी बात रख रहा हूं आप सब मेरी बात से सहमत हो तो हाथ उठाएं । भोलू बंदर की बातें सुनकर सब सम्मान में उठ खड़े हुए, हाथ ऊपर करते हुए तालियां बजाने लगे।

भोलू बंदर का कवि हृदय यह दृश्य देख मन से कविता लिख रहा था भोलू बंदर बोला -मेरे साथ ये पंक्तियां सभी गुनगुनाओ। 'मिलकर ऐसा काम करेंगे नंदनवन का नाम करेंगे सुखद चांदनी बरसेगी रिमझिम

पर्यावरण का काम करेंगे। भोलू बंदर के साथ -साथ सभी ये कविता की पंक्तियां ऊंचे स्वर में गुनगुना रहे थे।भोलू बंदर को विश्वास हो गया था नंदनवन अपने सौंदर्य से सुखद पर्यावरण से जरुर इस बार खिलखिलाएगा।

लाल बहादुर श्रीवास्तव
बाल साहित्यकार

ऊपरवाला

आज भी बारह वर्षीय गोलू आकाश की ओर तब तक देखता रहा, जब तक गुब्बारा ओझल नहीं हो गया। लेकिन आज वह जल्दी घर नहीं लौटा। रात्रि के दस बज गए थे। वह वहीं मैदान के एक ओर गुमसुम बैठा रहा था। उसके सामने बिस्तर पर पड़ी माँ, दवाई और दो जनों के खाने जैसे कई प्रश्न एक के बाद एक नाच रहे थे। पेट पर सबसे बड़ी मार तो सरकार के भिक्षावृत्ति और बच्चों से काम न लेने के सख्त आदेश से पड़ी थी। होटल मालिक ने आज उसे भगा दिया और कहा, 'गोलू, कल से आना बंद कर देना, नहीं तो हम जेल चले जाएंगे।' वह बहुत गिड़गिड़ाया, लेकिन मालिक ने एक न मानी। 'हे भगवान! अब मैं क्या करूँ?' गोलू झोपड़पट्टी में रहता था। जब से मेरा इस शहर में तबादला हुआ था, तब से मैं रोज सुबह चाय पीने उसी होटल पर जाता था। उसके नन्हें हाथ फटाफट कभी टेबल पर तो कभी बर्तनों पर घूमते रहते थे। उससे मेरी दोस्ती भी हो गई थी। वह बहुत प्यारा, नम्र और शालीन था। अन्य बच्चों की तरह गाली-गलौज या मारपीट से दूर रहकर वह सदा अपने काम में व्यस्त रहता था। रात्रि के भोजन के बाद आधा घंटा बाहर घूमने का मेरा नियम था। मैंने देखा, कोई लड़का अंधेरे में दोनों घुटनों में सिर दबाए बैठा था। पास जाकर देखा–वह गोलू था। 'क्या बात है, गोलू? तुम्हारा गुब्बारा तो उड़ गया, अब घर जाओ।' यह सुनते ही वह रोने लगा। मैंने देखा, गुब्बारा पास के पेड़ पर अटका हुआ था। गुब्बारा निकालकर जब उसे दिया, तो उस पर लिखा था– 'ऊपरवाले, माँ-बेटे की ओर ध्यान देना।' मैंने पूछा, 'गोलू, तुम्हें क्या परेशानी है, बेटा?' सिसकते हुए उसने फटाफट सारी कहानी सुना दी। सुनकर मेरा दिल भी भर आया। मैं तुरंत गोलू को लेकर उसकी झोपड़ी में गया। उसकी माँ बुखार में तप रही थी। पहले दोनों के खाने-पीने की व्यवस्था की, फिर डॉक्टर को दिखाया। दवाई देते ही माँ को कुछ आराम मिला। बाद में मैंने गोलू को स्कूल में भर्ती करवा दिया। गोलू ने सहज भाव से कहा, 'देखा बाबूजी, आपको ऊपरवाले ने ही भेजा है। एक दिन मैंने एक बूढ़े बाबा को कुछ खाने को दिया था। उन्होंने दुआ देते हुए कहा था– 'ऊपरवाला किसी न किसी को भेजकर मदद करवा देता है। उसे बच्चों की चिंता होती है। वह सदा सबको सुख देने के लिए तत्पर रहता है। भगवान कभी भी किसी को दुःख नहीं देते।'

— अमिता मराठे, इंदौर

तीन गांठें

महात्मा बुद्ध अक्सर अपने शिष्यों को शिक्षा प्रदान किया करते थे। एक दिन प्रातः काल बहुत से भिक्षुक उनका प्रवचन सुनने के लिए बैठे थे । महात्मा बुद्ध समय पर सभा में पहुंचे, पर आज शिष्य उन्हें देखकर चकित थे क्योंकि आज पहली बार वे अपने हाथ में कुछ लेकर आए थे। करीब आने पर शिष्यों ने देखा कि उनके हाथ में एक रस्सी थी। बुद्ध ने आसन ग्रहण किया और बिना किसी से कुछ कहे वे रस्सी में गांठें लगाने लगे ।

वहाँ उपस्थित सभी लोग यह देख सोच रहे थे कि अब महात्मा बुद्ध आगे क्या करेंगे ! तभी बुद्ध ने सभी से एक प्रश्न किया--' मैंने इस रस्सी में तीन गांठें लगा दी हैं , अब मैं आपसे ये जानना चाहता हूँ कि क्या यह वही रस्सी है, जो गाँठें लगाने से पूर्व थी ?' एक शिष्य ने उत्तर में कहा,' गुरूजी इसका उत्तर देना थोड़ा कठिन है, ये वास्तव में हमारे देखने के तरीके पर निर्भर है। एक दृष्टिकोण से देखें तो रस्सी वही है, इसमें कोई बदलाव नहीं आया है । दूसरी तरह से देखें तो अब इसमें तीन गांठें लगी हुई हैं जो पहले नहीं थीं; अतः इसे बदला हुआ कह सकते हैं। पर ये बात भी ध्यान देने वाली है कि बाहर से देखने में भले ही ये बदली हुई प्रतीत हो पर अंदर से तो ये वही है जो पहले थी; इसका बुनियादी स्वरुप अपरिवर्तित है। '

'सत्य है ! ', महात्मा बुद्ध ने कहा ,' अब मैं इन गांठों को खोल देता हूँ। 'यह कहकर बुद्ध रस्सी के दोनों सिरों को एक दूसरे से दूर खींचने लगे। उन्होंने पुछा, 'तुम्हें क्या लगता है, इस

प्रकार इन्हें खींचने से क्या मैं इन गांठों को खोल सकता हूँ ? ' 'नहीं-नहीं , ऐसा करने से तो ये गांठें तो और भी कस जाएंगी और इन्हे खोलना और मुश्किल हो जाएगा। ', एक शिष्य ने शीघ्रता से उत्तर दिया। महात्मा बुद्ध ने कहा, ' ठीक है , अब एक आखिरी प्रश्न, बताओ इन गांठों को खोलने के लिए हमें क्या करना होगा ?' शिष्य बोला ,' इसके लिए हमें इन गांठों को गौर से देखना होगा , ताकि हम जान सकें कि इन्हे कैसे लगाया गया था , और फिर हम इन्हे खोलने का प्रयास कर सकते हैं। '

'मैं यही तो सुनना चाहता था। मूल प्रश्न यही है कि जिस समस्या में तुम फंसे हो, वास्तव में उसका कारण क्या है, बिना कारण जाने निवारण असम्भव है। मैं देखता हूँ कि अधिकतर लोग बिना कारण जाने ही निवारण करना चाहते हैं , कोई मुझसे ये नहीं पूछता कि मुझे क्रोध क्यों आता है, लोग पूछते हैं कि मैं अपने क्रोध का अंत कैसे करूँ ? कोई यह प्रश्न नहीं करता कि मेरे अंदर अहंकार का बीज कहाँ से आया , लोग पूछते हैं कि मैं अपना अहंकार कैसे खत्म करूँ ? प्रिय शिष्यों , जिस प्रकार रस्सी में गांठें लग जाने पर भी उसका बुनियादी स्वरुप नहीं बदलता उसी प्रकार मनुष्य में भी कुछ विकार आ जाने से उसके अंदर से अच्छाई के बीज खत्म नहीं होते। जैसे हम रस्सी की गांठें खोल सकते हैं वैसे ही हम मनुष्य की समस्याएं भी हल कर सकते हैं। इस बात को समझो कि जीवन है तो समस्याएं भी होंगी ही , और समस्याएं हैं तो समाधान भी अवश्य होगा, आवश्यकता है कि हम किसी भी समस्या के कारण को अच्छी तरह से जानें, निवारण स्वतः ही प्राप्त हो जाएगा । '

यह कहते हुए महात्मा बुद्ध ने अपनी बात पूरी की ....।

रमेश चौपड़ा
सौभाग्य
20 बी बिल्डर्स
कॉलोनी इन्दौर 452003